भूमिका

स्वातंत्र्योत्तर युग में रचित हिन्दी प्रबंध काव्यों को मुख्यतः तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है - 1· पौराणिक, 2· ऐतिहासिक, 3· कल्पनाश्रित। यह वर्गीकरण मुख्यतः कथावस्तु की दृष्टि से ही है किन्तु इन सभी का मूल लक्ष्य प्रायः एक ही है - वह है संस्कृति के विभिन्न पक्षों का चित्रण करते हुए शाश्वत मूल्यों की प्रतिष्ठा करना।

पौराणिक प्रबंध काव्य के अंतर्गत अधिकांश प्रबंध काव्य रामायण, महाभारत एवं विभन्न पौराणिक आख्यानों पर आधारित है। इनमें भी रामायण सम्बधी काव्यों की संख्या सर्वाधिक है। इन काव्यों में पुरूषोत्तम राम को ही नायक के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनके सामाजिक, राजनीतिक एवं अध्यात्मिक आदर्शों की स्थापना की गई है। इन कवियों ने काव्य के माध्यम से न केवल भारतीय संस्कृति के परम्परागत मूल्यों की व्याख्या की है अपितु आधुनिक युग की दृष्टि से भी मानव संस्कृति के शाश्वत मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया है।

राम-चरित्र संबंधी काव्यों को प्रायः "रामायण" कहे जाने की परंपरा रही हैं, किंतु तुलसीदास ने अपने काव्य को "रामचरितमानस" के नाम से पुकारा है जिसका विशेष कारण यह है कि कवि ने इसे मानस रूपी सरोवर के रूपक के रूप में प्रस्तुत किया है। इस परंपरा के अनेक काव्यों में राम के स्थान पर सीता या जानकी के व्यक्तित्त्व को भी प्रमुखता प्रदान करते हुए उनके उज्ज्वल चरित्र का आख्यान किया गया है जिनमें राजाराम शुक्ल द्वारा रचित "जानकी जीवन" (1970), आचार्य श्री तुलसीजी द्वारा रचित "अग्नि परीक्षा" (1961), रघुवीर शरण मित्र द्वारा रचित "भूमिजा" 1961 आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस परंपरा में कविवर नागार्जुनजी ने अपना "भूमिजा" नामक सफल खंडकाव्य लिखकर सीता को एक आधुनिक दृष्टिकोण में प्रस्तुत किया है।

"भूमिजा" के राम, रामायण के अन्य कथा के राम से अधिक जनोनुकुल अन्ततः शाश्वत एवं सनातन है। लोक धर्म की इसी कसौटी पर कसने के लिए कवि नागार्जुनजी ने चतुर जौहरी की भाँति राम-कथा के विविध स्वर्णिम प्रसंगो में उन तीन प्रसंगों को हो चुना है, जो खुद ही बन गये हैं। इन प्रसंगों में राम का व्यक्तित्त्व पूरा का पूरा लोकधर्मी रहा है, जिसे अभी तक राजधर्म का ग्रहण नहीं लगा है।

दूसरी ओर लोकतंत्री भूमि से उपजी "भूमिजा" सीता है, जिसे अयोध्या बर्दाश्त नहीं कर पायी, तो उसे वाल्मीकि जैसे युग-द्रष्टा कवि का आश्रय मिलता है। वह अपने दोनों बच्चों को इसी लोक परिवेश में सामर्थ्यवान बनाती है। उन दोनों बच्चों को प्राप्त लोक संस्कार अयोध्या की झूठी मर्यादा को तोडने और राजधर्म को लोकधर्म में बदलने में अवश्य ही समर्थ हुआ होगा। कवि ने इस ओर संकेत करना चाहा है। कवि नागार्जुनजी ने दिखाया है -कि लव-कुश का व्यक्तित्त्व राम-लक्ष्मण की तुलना में तनिक भी छोटा नहीं पडता, वरन् ज्यादा प्रभावपूर्ण लगता है। इस दृष्टि से तुलना करने पर कवि का उद्देश्य परिलक्षित हो जाता है कि जिस रघुकुल रीति-नीति और प्रीति की बात समय-समय तक होती आई है, वह सीता के त्याग, तपस्या और साधना के समक्ष फीका है।

राम तथा सीता पर लिखा गया काव्य विस्तृत है। रामायण के अन्य पात्रों पर भी बहुतसा काव्य लिखा गया है और अब भी लिखा जा रहा है। इन पौराणिक काव्यों को आधुनिकतम् दृष्टि में प्रस्तुत करना कोई सहज काम नहीं है। फिर भी मैंने नागार्जुन की "भूमिजा" को अपने ढंग से सोचा है। आप इसे पसन्द करेंगे। प्रत्येक क्रांतिदर्शी कवि अपने समय का संदेशवाहक होता है। कवि का काम समकालीनता को समर्थ आयाम देने के साथ भविष्य को भी नये रूप में परिवर्तित करने का है।

कविवर नागार्जुनजी ने एक पौराणिक आख्यान के द्वारा नयी पीढी को बहुत ही मौल्यवान संदेश दिया है। अपने जीवन-मूल्यों की रक्षा के लिए सभी प्रकार की विपत्तियों को धैर्यपूर्वक सहन करते हुए अपने सद्पथ पर टिके रहने का संदेश उन्होंने दिया है। साथ ही कवि ने भारतीय संस्कृति के आदर्शों को निरूपित करते हुए असत्य पर सत्य, आसक्ति पर अनासक्ति, एवं आत्ममोह पर आत्मोसर्ग की विजय दिखाते हुए समष्टिहित के लिए व्यष्टि के बलिदान का संदेश दिया है।

नागार्जुन ने आधुनिक हिन्दी कविता को एक नया आयाम तथा रूढियों से विद्रोह की चेतना प्रदान की है। उन्होंने कविता को जनसमाज के निकट लाने का प्रामाणिक प्रयास किया है, जिनमें वे शत प्रतिशत खरे उतरे हैं।

सन 1947 से लेकर सन 1980 तक लगभग डेढ़ सौ प्रबंध काव्य प्रकाशित हुए हैं। उनमें से कुछ प्रबंध काव्यों पर समग्र रूप से समीक्षात्मक आकलन हुआ भी है। उसे देखकर लगता है वह तो गागर में सागर भरने का प्रयास हो। "भूमिजा" पर नये आधुनिक एवं अध्यात्मिक तथा आज के परिवेश में इस खंडकाव्य की व्याख्या तथा आकलन करने के लिए ही मैंने प्रस्तुत विषय को अपने अध्ययन का क्षेत्र चुना है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध छह अध्यायों में विभाजित है, जिसमें नागार्जुन के "भूमिजा" इस खंडकाव्य के साथ उनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व का परामर्श है। प्रथम अध्याय में नागार्जुन के जीवन वृत्त के साथ-साथ उनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व का परिचय दिया गया है। दूसरे अध्याय में प्रबंध काव्य का स्वरूप और "भूमिजा" का प्रबंध्द काव्यत्त्व एवं खंडकाव्यत्त्व सिध्द करने का प्रयास किया गया है। तीसरे अध्याय में "भूमिजा" की कथा को विस्तार के साथ प्रस्तुत किया है। राम-कथा के तीन प्रसंग जो अयोध्या के राजतंत्रीय परिसर अथवा लंका विजय यात्रा के कूटनीति भरे परिवेश से सर्वथा दूर लोकभूमि में घटित होते हैं, उन्हें क्रमशः दिखाया

गया है। चतुर्थ अध्याय में "भूमिजा" के पूरे पात्रों का परिचय दिया है। गौण पात्रों का भी भावनात्मक परिचय देने का मेरा प्रयास रहा है। स्वयं कवि संवेदनाशील होने के कारण उनका भाव रेखांकन उभर आया है तथा विविध भावों के विविध रंग इसमें दिखायी देते हैं। पंचम अध्याय में "भूमिजा" का शिल्पविधान उजागर हुआ है। इसमें कवि को भाषाशैली एवं काव्य-शिल्प का रूप दिखाई देता है। षष्ठम और अंतिम अध्याय में "भूमिजा" खंडकाव्य का समग्र मूल्यांकन करने की मैंने चेष्टा की है। लघु आकारवाले इस अंतिम अध्याय में आधुनिक कविता तथा खंडकाव्य में नागार्जुनजी की संभावनाओं पर भी विचार विमर्श किया गया है।

मेरे निर्देशक छत्रपति शिवाजी कॉलेज के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के डॉ·शिवाजीराव निकमजी ने शोध-कार्य के समुचित एवं संतुलित संशोधन एवं निर्देशन में पग-पग पर मुझे मार्गदर्शन किया है। उनके विद्वतापूर्ण निर्देशन में यह लघु-शोध-प्रबंध लिखा गया है। उन्ही की प्रेरणा, शुभाशंसा का प्रतिफल यह शोध-कार्य है।

इस शोध-संकल्प की पूर्ति में जिनसे मुझे प्रोत्साहन मिला, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना मैं अपना पुनित कर्तव्य मानता हूँ। लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ·जी·एस·सुर्वेजी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे निर्देशन पुस्तकीय सहायता सामग्री संवर्धन में सहयोग दिया है। उनकी ज्ञान-गरिमा ने मुझे यह शोध-कार्य संपन्न करने की प्रेरणा दी।

मेरे परमपूज्य पिता श्री·निवृत्ती तातोबा कुंभार उनका प्रोत्साहन मेरा प्रबंध पूरा करने के लिए हमेशा प्रेरणादायी रहा है। उनकी अपार इच्छा के कारण मैं मेरा यह शोध कार्य सफल कर सका हूँ।

मेरे इस लघु-शोध-प्रबंध पूरा करने में आदरणीय गुरूवर्य बाबासाहेब चव्हाण तथा मेरे प्रिय मामाजी श्री·विलास कुंभार के सहयोग का मेरे लिए बहुत अधिक मूल्य है, जिसे मैं शब्दों में नहीं व्यक्त कर सकता, यह भी तय है कि

इस सहयोग के बिना यह कार्य पूरा नहीं हो सकता था।

लाल बहादुश शास्त्री कॉलेज, सातारा के ग्रंथपाल तथा उनके सहयोगियों का शुक्रिया अदा करने मैं अपना कर्तव्य मानता हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबंध में मेरे मित्रों ने जो सहयोग दिया हैं, पग-पग पर प्रोत्साहित किया - प्रेरणा प्रदान की, वे है किरण पाटोले, कलंदर मुल्ला, मोहन सावंत आदि। उनके आत्मीयता पूर्ण योगदान के प्रति हृदय के गहनतल से आभार प्रकट करना मात्र औपचारिकता होगी।

जिनके प्रति मेरी संपूर्ण श्रध्दा विनयागत है, उनके साथ ही उन सभी कवियों, लेखको की पुस्तक रचनाओं का आभारी हूँ। जिनसे मैंने किसी-न किसी रूप में सामग्री ग्रहण की हैं।

इस लघु-शोध-प्रबंध का अत्यन्त तत्परता से और सुरूचिपूर्ण टंकन-लेखन करनेवाले **"रिलायंस सायक्लोस्टायलिंग, सातारा** के श्री·मुकुन्द ढवलेजी, श्री·राजू कुलकर्णी और श्री·सुशीलकुमार कांबलेजी और उनके सहयोगी धन्यवाद के पात्र हैं।

सातारा

दिनांक - 25/6/97

श्री·शिवाजी निवृत्ती कुंभार